Vol 3 Issue 5 Nov 2013

Impact Factor : 1.9508 (UIF)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1.9508 (UIF)

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-5, Nov-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

प्राचीन भारतीय समाज में शूद्रों की स्थिति

सदानन्द पाण्डेय
एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी.

सारांशः प्राचीन भारतीय समाज में वर्णों की उत्पत्ति के सम्बंध में दैवीय और जन्मगत सिद्धांत को माना जाता था। वैदिक काल में यही धारणा थी। कालान्तर में इस व्यवस्था में शनैः शनैः बदलाव आया और इसे कर्म के अनुसार विभाजित किया जाने लगा। कर्म को आधार मानकर जातियों के उत्थान और निर्वहन की बात की जाती थी और प्रायः व्यक्ति की पहचान उसके कर्म के अनुसार किया जाने लगा। इस तरह से वैदिक काल के बाद धीरे–धीरे इनकी स्थिति दयनीय होती चली गयी।

महत्वपूर्ण शब्द – वर्ण, महाकाव्य काल, द्रविड़ शबर, आक्रांता।

प्रस्तावनाः

प्राचीन भारत में शूद्र की उत्पति के बारे में कई विचार आये, लेकिन उस समय भारतीय समाज में शूद्र वर्ण व्यवस्था का एक प्रमुख अंग था और इसका विकास चातुर्वण्य की स्थापना के साथ हुआ। ऋवेद के दसवें और अंतिम मण्डल में शूद्र वर्ण का विस्तृत वर्णन किया गया है उत्तर वेदिक काल में शूद्रों के विकास की चर्चा की गई है। महाकाव्य काल और पुराणों में शूद्रों के सामाजिक कार्य में संलिप्तता का वर्णन किया गया है। गीता में कर्म के आधार पर शूद्रों का वर्णन (चातुर्वण्य) चारों वर्ण में निचली पायदान पर किया गया है। धीरे–धीरे बाद के कालों में शूद्रों के साथ अस्पृष्यता की भावना को बढ़ते हुए वर्णित किया गया और इस तरह से उनकी दशा में थोड़ी गिरावट और दयनीय पहलू को देखा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

सामाजिक उद्देश्य :–

वर्ण व्यवस्था के आधार पर भरतीय समाज की संरचना की जानकारी प्राप्त करना और उनकी स्थिति को जानने का प्रयास।

राजनीतिक उद्देश्य :–

वर्ण व्यवस्था के आधार पर भारतीय समाज की राजनीतिक परिदृष्य को जानने का प्रयास और उनके आधार पर समाज के स्तर को जानना।

वर्ण व्यवस्था मं जन्मजात और कर्म के आधार पर समाज के विकास को जानना और उसमें शूद्रों की स्थिति जन्म और कर्म को क्रमशः समयन्तराल में विकसित होते देखना। वर्ण शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के वृ वर्णों अथवा वरी धातु से हुई है, जिसका अर्थ होता है चुनना या वरण करना। भारतीय आर्य परम्परा में जिस प्रकार से चारों पुरूषार्थों की प्राप्ति हेतू चार आश्रमों की व्यवस्था दी गयी है, उसी तरह वर्ण– व्यवस्था भी जीवन के महान लक्ष्य की सिद्धि हेतू ही की गयी थी। वर्ण व्यवस्था समाज में ऐतिहासिक घटनाओं के सन्दर्भ में शनै–शनै विकसित हुई। ऋग्वैदिक काल से मौर्योत्तर काल तक शूद्रों की सामाजिक स्थिति को निम्न प्रकार देख सकते है।

ऋग्वैदिक काल :–

वर्णों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई तरह के विचार है। जिनमें दैवी अथवा परम्परागत सिद्धान्त उल्लेखनीय है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरूष सूक्त में इसका वर्णन मिलता है, जिसमे कहा गया है। कि –

ब्रह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद वैश्यः पद्म्थांऽशूद्रोऽजायत्।। ऋग्वेद (10,9,12)

आदि पुरूष (विराट पुरूष) के मुख से ब्राह्मण, मुजाओं से क्षत्रिय, उरू (जांघ) से वैश्य और पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई। ऋषियों की यह व्याख्या निगूढ़ भावों से भरी है और सर्वथा प्रतीकात्मक है। वस्तुतः समाज रूपी शरीर के ये चारों वर्ण अंग है। जिनके परस्पर सहयोग से समाज का जीवन सुख सुविधापूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता है।

उत्तरवैदिक काल :–

प्रारंम्भिक काल में इनमें जो विवाद रहा हो लेकिन उत्तर वैदिक काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रा की मान्यता स्पष्ट थी। सबों का अपना–अपना महत्व था तथा उनके कर्तव्यों का निर्धारण किया गया था। समाज के चारों अभिन्न अंग थे। शुद्धता की दृष्टि से शूद्रों को चौथे स्थान पर रखा गया था। कुछ धार्मिक ग्रन्थों में संस्कृति के आधार पर वर्ण– विभाजन का विश्लेषण किया था। कुछ ग्रन्थों में चारो वर्णों के अलग–अलग रंग बताये गए है।

ब्रह्माणां तु सितो क्षत्रियाणां तु लोहितः।
वैश्यनां पतिको वर्ण शूद्रणासितस्थता।।
महाभारत, शान्ति पर्व, 188/5

इनके अनुसार मनुष्यों के चारो वर्णों में ब्राह्मण का रंग श्वेत (गोरा) क्षत्रिय का रंग लोहित (लाल), वैश्यों का रंग पीतक (पीला) और शूद्र का रंग काला होता है। आर्यों के आगमन तथा प्रसार के साथ–साथ शूद्र छोटे सेवक के रूप में आये। इतिहासकार ए. एल. बाशम के अनुसार – शूद्र वर्ण के लोग वैसे थे जो युद्ध वंदी थे या फिर मैनुअल लेबर (शारीरिक मजदूर) थे। वास्तव में शूद्रों की स्थिति शुरू से ही समाज में कुछ–कुछ दयनीय थी।

रोमिला थापर के अनुसार :–

सभी अनार्यों को दास नहीं कहा गया है। अर्थवेद के 19वें अध्याय में भी शुद्र का वर्णन किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि शूद्र आर्यों का ही एक कबीला था जो ऋग्वैदिक आर्यों के बाद 1500 (बी.सी.) ई.पू. में भारत आये और भारत में अवस्थित आर्यों से पराजित हुए। ऋग्वेद में हमे दसराज्ञ युद्ध का वर्णन मिलता है।

प्रों. डी.एन. झा के अनुसार – वैदिक काल में शूद्र नाम का कोई कबीला था। उसमें उत्पन्न होनेवाले लोग शूद्र कहलाते है।

उत्तरवैदिक काल :–

ब्राह्मण ग्रन्थों में रत्नाकर और तक्षक की गणना रत्नियों में की गयी है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि समाज में उनकी प्रतिष्ठा थी उत्तरवैदिक काल में ही आर्यों और दासो में वैवाहिक सम्बन्ध होने लगे थे आर्य शूद्र स्त्री से विवाह कर सकता था। किन्तु शूद्र को आर्य वर्ण की स्त्री से विवाह करने का अधिकार नहीं था। वैश्य शूद्र स्त्रियों से विवाह करने के कारण ब्राह्मण और क्षत्रियों की भाँति रक्त की पवित्रता नहीं रख सके। इसलिए आगे चलकर इन दो उच्च वर्णों ने अपने रक्त की शुद्धता बनाये रखने के लिए कुछ नियम बनाये। इसकाल के कुछ विद्वान ऐसे परिस्थितियों में शूद्रों से सम्बन्ध तोड़ने के पक्ष में नहीं थे।

शूद्र से अग्निहोम के लिए दूध नहीं निकलवाना चाहिए। (काठक संहिता) किंतु शतपथ ब्राह्मण सोमयज्ञ में शूद्रों को भाग लेने का अधिकार देता है। (शतपश ब्राह्मण, अध्याय –2) रथकार की गणना शूद्रों में की जाती थी। परन्तु उसे वैदिक यज्ञ करने का अधिकार दिया गया था। ब्राह्मण ग्रंथ में वर्णित है कि यज्ञ के लिए अभिष्ट व्यक्ति को शूद्र से बात नहीं करनी चाहिए। किन्तु उपनिषद् से ज्ञात होता है कि सत्यकाम जावला तथा जनश्रुति जैसे साहित्यिक शूद्रों के वैदिक

Impact Factor : 1.9508(UIF)

दर्शन के अध्ययन से वंचित नहीं किया गया है। उपयुर्क्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि इस काल में शूद्रों की स्थिति अस्पष्ट थी। इस काल में जो भी प्राचीन सन्दर्भ मिले हैं उससे ज्ञात होता है कि शूद्र सामुदायिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्य वर्णों के साथ भाग लेते थे। लेकिन वैदिक काल के अंत में उन्हें अधिकतर धार्मिक कृत्यों से वंचित किये जाने के कारण उनकी आर्थिक दशा थी। वे ब्राह्मणों को दक्षिणा में पुष्कल राशि देने में असमर्थ थे।

वेदोत्तर काल :–

वैदिकोत्तर काल यानि की छठीं शताब्दी ई.पूर्व से तीसरी शताब्दी ई० पू० तक शूद्रों की स्थिति में गिरावट आयी। शूद्रों के प्रति नियम और कठोर हो गये। शूद्रकालिन समाज में उसकी दशा काफी संकुचित तथा दयनीय हो गये थे।

उन्हें तप, व्रत, वेदाध्ययन आदि से वंचित कर दिया गया था। वैदिक मंत्र सुननेवाले शूद्र के कानों में तप्त लाख पदार्थ भर देना चाहिए। यदि वह वेद के मंत्र का उच्चारण करता है तो उसकी जिह्वा काट लेनी चाहिए (गौतम स्मृति)। वास्तव में उपनयन के साथ–साथ अन्य संस्कारों से वे वंचित थे। इस काल में भी शूद्रों का मुख्य कार्य उच्चवर्ण की सेवा करना था। उसके द्वारा अर्जित सम्पत्ति पर उसके मालिक का अधिकार माना जाता था। साथ ही साथ यदि उसकी हत्या उच्च वर्णों के हाथों हो जाती है तो बौधायन के अनुसार उसकेलिए वही दण्ड था जो कौवे, उल्लू आदि के हत्या पर दिया जाता था। इसकाल में भी कुछ द्विज शूद्रों से विवाह करते थे। यह बात धर्मसूत्रों में संकर जातियों के विवेचन से स्पष्ट है कि इनका एक मात्र कार्य यह था कि ब्राह्मणों की सेवा की जाय। रामायन (प'/6/9)

महाकाव्य काल :–

ऐसा प्रतीत होता है महाकाव्य काल में शूद्रों के ऊपर सामाजिक नियंत्रण मूल रूप से अपरिवर्तनीय रही। फिर भी महाभारत एवं रामयन में हमें शूद्रों की स्थिति में सुधार के संकेत भी मिलते हैं। शूद्रों का प्रमुख धर्म अन्य वर्णों की सेवा करना थ। उसी समय दस्यु कहीं जाने वाली जातियों जैसे – पौण्ड्रक, ओह, द्रविड़, पारद, कम्बोज आदि शूद्र जाति में समाविष्ट की गयी। साथ ही महाभारत में यह भी कहा गया है कि अपनी सम्पत्ति धन वह स्वामी के निमित्त रखे। विदुर ने भी स्वीकार किया है कि उसे शूद्र होने के कारण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। लेकिन वहीं पर हमें महाभारत में यह भी देखने को मिलता है कि युधिष्ठिर ने अपने राजसूययज्ञ में शूद्र प्रतिनिधि को भी आमन्त्रित किया था। वाणिज्य, व्यवसाय, उद्योग और पशुचारण की अनुमति भी महाभारत में प्रदान की गयी है। (महाभारत से ही ज्ञात) होता है कि विदुर, कण्व एवं मांतुग जो जन्मा शूद्र थे। अपने कार्यों के कारण समाज में समान्गी स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार महाभारत में ही हमें दोनों प्रकार के विचार देखने को मिलता है। एक कठोरवादीऔर दूसरा व्यवहारवादी।

रामायण में उत्तरकाण्ड में सम्मुख वघ प्रकरण को छोड़कर कहीं भी शूद्रों के प्रति कठोरता का वर्णन नहीं मिलता है। इससे हमें ज्ञात होता है कि शूद्रों को भी स्वर्ग प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। उदाहरण के तौर पर शबरी शबर जाति की शूद्र महिला थी, उसने दिव्यलोक प्राप्त किया था। दशरथ के अश्वमेध यज्ञ में भी शूद्रों को आमंत्रित करने का वर्णन मिलता है। अतः रामायन काल से स्पष्ट होता है कि महाकाव्य काल में शूद्रो के प्रति उदार भावना थी। पुराणों में भी उसके प्रति उदार भावना व्यक्त की गई है। इसमें उन्हें दान देने एवं इंद्रिय निग्रह द्वारा मोक्ष प्राप्ति का उल्लेख मिलता है। फिर भी तत्काल सामाजिक व्यवस्था में नियम एवं सिद्धान्त इतने कठोर थे कि उनकी उपेक्षा कर पाना शूद्रों के लिए असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य था। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि सभी प्राणी की उत्पत्ति मुझ से हुई ओर इनके वर्णों का निर्धारण इनके कर्मों के आधार पर किया गया है।

बौद्ध काल :–

बौद्ध काल में समाज के सभी वर्गों के लोगों को समानता के आधार पर देखा जाता था। स्वयं भगवान बुद्ध ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, व्यापारी, चाण्डाल आदि को समान दृष्टि से देखने कार्य किया था। और इस समय में उनकी (शुद्रों) स्थिति में काफी सुधार आया था। जातक कथा से हमें उनकी जानकारी प्राप्त होती है। फिर भी आम शूद्रों का जीवन उल्लिखित वर्ण–व्यवस्था के अनुसार ही थी। लेकिन "अर्थशास्त्र" से ज्ञात होता है कि इस काल में शूद्र कृषि कार्य करते थे। राजकीय उद्योग, खानों आदि में कार्य करते थे। शिल्पी शूद्र होते थे राजा उनके हितों की रक्षा करते थे। प्रियदर्शी अशोक ने दासों और भृत्तियों के साथ–साथ अच्छा सलूक करने का निर्देश दिया है।

मौर्यकाल :–

चुँकि कौटिल्य ब्राह्मणों द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था का समर्थक था और कमोवेश मौर्यकाल में भी उनकी अवस्था वही बनी रही जो पूर्व के काल में थी। मौर्य शासक चन्द्र गुप्त मौर्य शूद्र वंश से सम्बन्धित थी। वर्ण–व्यवस्था में जो राजा होता था उसे वर्णों में श्रेष्ठ समझा जाता था।

चातुर्वण्य मयासृष्टं गुणा कर्म विभागशः।
तस्य कर्तारमणिमां विद्धयकर्तारमयम्।। (गीता 4.13)

कतिपय धर्मशास्त्रकारों द्वारा शूद्रों के प्रति उदार भावनाएँ भी व्यक्त की गई है। अगर वे भक्ति में निमग्न रहें, यदि सुरापान न करें, इन्द्रियों को संयत रखें और निर्भय रहें तो उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

अमदपश्च यःशूद्रो भवभक्तों जितेन्द्रियः।
ब्राह्मण्ड पु. 4.2.314
वायु पुराण 101/353

मौर्योत्तर काल :–

मौर्योत्तर काल में भी उसकी स्थिति में कोई खास सुधार देखने को नहीं मिलता है। मनु, पराशर, गौतम सबों के अनुसार शूद्रों का एक मात्र कर्म द्विजों की सेवा करना है। लेकिन मेघा तिथि के काल में उसके व्यवसाय को सद्भावना की दृष्टि से देखा जाता था। मेघातिथि ओर विश्वरूप दोनों के अनुसार शूद्र सिर्फ सेवक ही नहीं थे बल्कि वे व्याकरण एवं अन्य विषयों के शिक्षक हो सकते है जो अन्य वर्णों के लिए निर्दिष्ट है। लक्ष्मीधर का भी यही विचार है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और विशुद्धमन वाला शुद्र श्रेष्ठ था। वह पुनः लिखता है कि यदि कोई शूद्र किसी ब्राह्मण को पकाने के लिए चावल देता है तो इसमें कोई पाप नहीं है। अतः पातज्जलि के अनुसार इस युगे में उनकी अवस्था में सुधार अवश्य आया लेकिन व्यवहारिकता में ऐसा बहुत कम पाया गया है।

मौर्यों के परवर्तीकाल में भारत में अनेक विदेशी आक्रांताओं का बाढ़ आ गया और वे यहाँ के समाज में घुल–मिल गए। अतः कठोर सामाजिक नियंत्रित व्यवस्था के समर्थक मनु ने अनेक शूद्र के अन्तर्गत देशी तथा विदेशी तत्व को सम्मिलित किया था। जिसके कारण आगे चलकर यह वर्ग समुचित रूप से सबल हो गया था। इसी कारण प्राचीन काल से चली आ रही शूद्र विषय कठोर मान्यता के प्रति मनु जैसे कट्टरपंथी विचारक को भी परवर्ती परिस्थिति के अनुसार अपने को थोड़ा उदार बनाना पड़ा। उसे परिचर्या अरिरिक्त कई शिल्पों के अन्तर्गत स्वीकार किया गया। मनु के अनुसार– अपनी अपेक्षनीय व्यक्ति (शूद्र) से भी विद्या ग्रहण करनी चाहिए।

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात द्विज उच्चते।
वेद पठात भवते विप्रों, ब्रह्म जनेति ब्राह्मणः।।

मनु के बाद भी शूद्रों से प्रायः उसी प्रकार का व्यवहार किया जाता था। याज्ञवल्कय के अनुसार ब्राह्मणों को शूद्र का गोमत नहीं कराना चाहिए। बृहस्पति ने ब्राह्मण पिता और शूद्र माता से उत्पन्न पुत्र को सम्पत्ति का उत्तराधिकारी नहीं माना है। मूलतः शूद्रों की स्थिति में सुधार की प्रक्रिया काव्यकाल में हुई, उसका सीधा प्रभाव समाज में अव दिखलायी पड़ने लगा तथा धीरे–धीरे समाज में शूद्रों का दो वर्गों में विकास होने लगा था एक वर्ग तो वह जो ब्राह्मणों के निर्देशानुसार विशुद्ध आपत्य और धार्मिक सुधार किया करता था और दूसरा वर्ग वहजो असंस्कारयुक्त और असभ्य जीवन व्यतीत करता था। ये पंचमहायज्ञ धर्म का पालन करते हुए प्रशंसा को प्राप्त करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि शूद्रों का यह सन्मार्गी वर्ग वैश्यों की स्थिति तक पहुँच गया। यही कारण है कि गुप्तकाल में वैष्णव सम्प्रदाय जिसमें कर्मकाण्डों और वर्ग विभाजन का विशेष महत्व नहीं था। समाज का शूद्रों के प्रति दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ और उन्हें धार्मिक क्रियाकलापों में कुछ छूट प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में ऋग्वैदिक काल के बाद से उत्तरोतर उनकी दशा में गिरावट आयी और उसकी दश समाज में दयनीय थी। उन्हें विपत्ति काल में शिल्क, बढ़ईगिरि, वस्त्र बुनने एवं व्यापार आदि कार्य अपनाने का छूट स्मृतिकारों एवं धर्मसूत्रों ने उन्हें दिया। इससे उनकी स्थिति आंशिक रूप से सुधरी, फिर भी बहुसंख्यक शूद्रों की दशा दयनीय ही रही। गुप्तोत्तर काल में कहीं जाकर सदाचारी एवं सन्भार्गी शूद्रों का वैश्यों के समकक्ष रखा जाने लगा।

Impact Factor : 1.9508(UIF)

सन्दर्भ :–

(1)ऋग्वेद – 10.9.12
(2)महाभारत शान्ति पर्व – 188 / 5
(3)A.L. Basam, The Sudras were originaly the war captives or cons/or Longuered people command to mannual Labour.
(4)शतपथ ब्राह्मण II अध्याय
(5)गौतम स्मृति
(6)रामायन – I / 6 / 9
(7)गीता – 4.13
(8)ब्राह्मण्ड पुराण – 4,2,314
(9)वायु पुराण – 101 / 353
(10)मनु स्मृति – 2,228
(11)मनु स्मृति – 10 / 121

सन्दर्भ :–

1.सिंह, ब्रजभूषण, 1995: कृषि भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर।
2.सिंह गिरिजानन्दन, (संपादित) 2011: आधुनिक बिहार का भौगोलिक स्वरूप, आर. आर. बुक्स, नई दिल्ली।
3.हुसैन माजिद, 2010 : कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
4ण्Ahmad. E., 1995% Physical Economic and Regional Geography of Bihar.
5.Chatterjee S.P., 1964: Land utilization in the district of 24 Parganas, Bengal Cal. Geog. Soc. Pap No. VI P.p. 342-408.
6.Das K.N., 1973 : Population pressure and intensity of cropping in the kosi area, Bihar, geog revew os India, Vol. XXXV No.4 p.p. 309-324.
7.Dube, K.K. 1966: Use and misuse of land in the Kaval towns of U.P. (Ph.D.) B.H.U.
8.F.A.O. 1952 : F.A.O./UNEP, 1999, Land utilization in tropical area.
9.Singh M.B. and Kumar santosh 2010: optimum carrying capacity of land, Coloric density and intensity of population pressure change in Ballia district, Magadh Geographical review Vol - X, No.- 1 P.P. 19-43.
10.Srivastava S. and singh B.N., 2010: Recent Changes in landuse and cropping pattern in Azamgarh district, Magadh Geographical review. Vol. X, No. -1 P.P. 91-109.

INTERNET REFERANCE

1.http:/www.gov.bih.nic.in
2.http:/www.mapsofindia.com
3.http:/www.rural.nic.in
4.http:/www.planningcommission.nic.in

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net